سُورَةُ الشَّرۡحِ مَكِّيَّةٌ

सूरह अश्-शरह मक्का में उतारी गई (नाज़िल हुई)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَكَ صَدۡرَكَ ۙ ﴿1﴾

[हे नबी ﷺ] क्या हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा सीना (छाती) नहीं खोल दिया?

وَوَضَعۡنَا عَنۡكَ وِزۡرَكَ ۙ ﴿2﴾ الَّذِىۡۤ اَنۡقَضَ ظَهۡرَكَ ۙ ﴿3﴾

और हमने तुम पर से तुम्हारा बोझ उतार दिया; 2 जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ (चटका) दी थी! 3

وَرَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ ؕ ﴿4﴾ ﷺ

और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी चर्चा उच्च (ऊंची) कर दी!

فَاِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۙ ﴿5﴾ اِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ؕ ﴿6﴾

अतः निश्चय ही कठिनाई के साथ सरलता है। 5 निःसंदेह कठिनाई के साथ सरलता है। 6

فَاِذَا فَرَغۡتَ فَانۡصَبۡ ۙ ﴿7﴾

तो जब तुम निवृत्त (कार्य - मुक्त) हो जाओ तो [बंदगी में] परिश्रम करो।

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارۡغَبۡ ع ﴿8﴾

और अपने रब (पालनहार) की ओर उन्मुख (मन से एकाग्र) हो जाओ।